शोध प्रतिवेदन

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. एकता पारीक
(व्याख्याता)

प्रस्तुतकर्त्री
रतन कँवर
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना –

यदि हम चारों तरफ देखें तो हम एक सतरंगी संसार पाएँगे। हमारे घर, स्कूल, सड़क, गाँव और हमारे शहर छोटे–छोटे पौधों से बड़े–बड़े पेड़ों तक विभिन्न प्रकार के जीव–जंतु, रंग–बिरंगी चिड़ियाँ, ऊँचे– ऊँचे पर्वत, रेगिस्तान, पोखर–तालाब, लहलहाते खेत और कल–कारखाने। यदि हम खुद को एक बिन्दू माने तो पाएँगे कि कितना कुछ है जिसने हमें घेर रखा है। यह छटाँ प्राकृतिक भी है और मानवीय भी। प्राकृतिक छटाँ ईश्वर का वरदान है तो मानवीय छटाँ इस प्राकृतिक छटाँ को संजोकर रखने वाले पालनहार है। प्रकृति की हर एक छटाँ मानव के जीवन का आधार है तथा इस प्राकृतिक छटाँ को प्रदूषण रूपी राक्षस से बचाना हमारा कर्त्तव्य है। हम सब इस आवरण से घिरे इसके साथ समन्वय बना कर जीते हैं। ये विभिन्न तत्व जिन्होंने मिलकर हमें घेर रखा है, हमारा पर्यावरण बनाते हैं।

पर्यावरण शब्द दो शब्दों परि + आवरण से बना है। परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है घेरा अर्थात् हमारे चारों ओर का घेरा ही पर्यावरण

कहलाता है। पर्यावरण में उन सभी कारणों को सम्मिलित किया जाता है जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव मानव जाति के प्राकृतिक परिवेश पर होता है। मनुष्य एवं पर्यावरण के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। प्राचीनकाल से ही पृथ्वी पर घटित घटनाओं के कारण पृथ्वी के पर्यावरण में व्यापक परिवर्तन हुए हैं अनेक प्रजातियों का लुप्त होना इसी परिवर्तन का परिणाम है। इसी प्रकार पर्वत, पठार, मैदान, घाटी, वन, मिट्टी, हवा, पेड़–पौधों, जीव–जन्तु सभी कुछ पर्यावरण के अन्तर्गत आते है।

इसी सन्दर्भ में 1972 में स्टॉक होम में 'मानव पर्यावरण' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया और पर्यावरणीय समस्याओं को सुलझाने हेतु पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम को मूर्त रूप देने का विचार रखा गया।

व्यक्ति के लिए संसाधन बहुत महत्वपूर्ण है। संसाधनों पर ही व्यक्ति का विकास तथा उसकी जीवन शैली निर्भर करती है। पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्द्धन तथा सुस्पष्ट जीवन शैली के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करे जिससे इनकी उपलब्धता बनी रहे। आज दिखावे के लिए व्यक्ति अनेक संसाधनों का अनावश्यक उपयोग करता है जो कि गलत है। उदाहरणस्वरूप भवनों की सुन्दरता के लिए अनावश्यक लकड़ी का प्रयोग।

पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए हमें प्रत्येक कार्य पर्यावरण संगत करना चाहिए तथा अधिक से अधिक संख्या में पृथ्वी पर वृक्ष लगाने चाहिए। भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से वृक्षारोपण जैसा पुनीत कार्य दूसरा नहीं। विभिन्न विकास कार्यों, उद्योगों की स्थापना तथा कृषि कार्यों के लिए अतिरिक्त भूमि उपलब्ध कराने हेतु बहुत से वन क्षेत्रों का निर्वनीकरण हो चुका है एवं बढ़ती हुई आबादी का वनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। अतः आज के समय में बढ़ती हुई आबादी की वनाधारित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि वानिकी को बड़े पैमाने पर किसानों को अपनाना होगा, अनुपजाऊ एवं बंजर निजी भूमि पर भी वृक्षारोपण किए जाने की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि ग्रामीण अपनी ईंधन, चारा–पानी, इमारती व लघु प्रकोष्ठ की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आत्मनिर्भर हो सके।

2. अध्ययन का औचित्य –

पर्यावरण के क्षेत्र में पर्यावरण की जटिल प्रक्रिया को ज्ञात करना तथा उनके संरक्षण के लिए सचेष्ट समाज का निर्माण करना ही पर्यावरण चेतना है। प्रकृति एवं

पर्यावरण एक–दूसरे के अभिन्न अंग है। प्राचीनकाल से ही पृथ्वी पर घटित घटनाओं के कारण पृथ्वी के पर्यावरण में व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में मानव आधुनिकीकरण और विकास की अंधी दौड़ में शामिल होकर पर्यावरणीय मूल्यों को अनदेखा कर रहा है जो पूरे विश्व के लिए एक खतरे की घंटी हैं।

आज के विद्यार्थी कल का भविष्य हैं। यदि वे ही पर्यावरण के महत्व को समझकर सुव्यवस्थित तरीके से इसका संचालन तथा संवर्द्धन करें तो समाज में स्वतः ही परिवर्तन आएगा। अतः शोधार्थी ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को पर्यावरण चेतना तथा जल संरक्षण में अपनी भूमिका का निर्वाह करने हेतु चुना है जो शोध समस्या में अहम् भूमिका निभाते हैं।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित हैं –

(1) पर्यावरण चेतना विद्यार्थियों में किस प्रकार सरल तरीके से जागृत की जाये।

(2) पर्यावरण विद्यार्थियों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है।

(3) उच्च माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण चेतना हेतु कौन–कौनसे कार्यक्रम संचालित किये जाये ताकि विद्यार्थी पर्यावरण व जल संरक्षण के प्रति गंभीर हो व महत्व समझ सके।

समस्या कथन

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित है –

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना के प्रति सजगता का अध्ययन।

(2) ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

(3) शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में पर्यावरण व जल–संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

(4) ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में जल–संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

(5) शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में जल–संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं निर्धारित की गई है –

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण व जल–संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता पायी जाती है।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों के मध्य पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

(3) उच्च माध्यमिक स्तर की ग्रामीण व शहरी छात्राओं के मध्य पर्यावरण व जल–संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

(4) उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल–संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

(5) उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र तथा ग्रामीण छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

महत्व –

प्रस्तुत शोध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय रूचि की जानकारी जुटाने में अहम भूमिका का निर्वाह किया तथा साथ ही पर्यावरण को स्वच्छ तथा स्वास्थ्यवर्द्धक बनाने हेतु कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की भूमिका को प्रोत्साहित किया जिससे विद्यार्थियों में पर्यावरण तथा जल संरक्षण कार्यक्रमों में उत्साह के साथ भाग लेने की प्रवृत्ति विकसित की गई।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

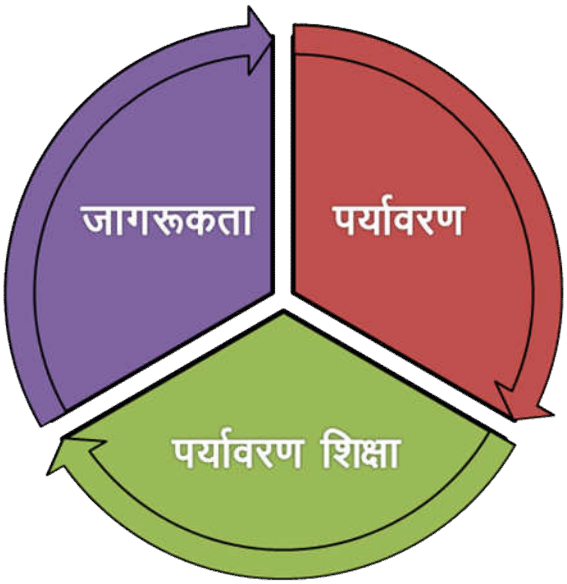

1. **पर्यावरण** – पर्यावरण शब्द दो शब्दों 'परि + आवरण' से बना है। 'परि' का अर्थ है चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ है घेरा, अर्थात् हमारे चारों ओर का घेरा।
2. **पर्यावरण शिक्षा** – वह शिक्षा जिसके द्वारा लोगों में पर्यावरण के प्रति सही समझ, संवेदनशीलता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण की उत्पत्ति होती है पर्यावरण शिक्षा कहलाती है।
3. **जागरूकता**– पर्यावरण शिक्षा द्वारा सही एवं गलत की पहचान तथा समस्याओं का निदान करना अर्थात् समस्या के प्रति जागृत या समस्या के कारणों का पता होना ही जागरूकता है।

अनुसन्धान की विधि –

शोधकर्त्री द्वारा शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के चर –

प्रस्तुत शोध में चर के दो प्रकार हैं –

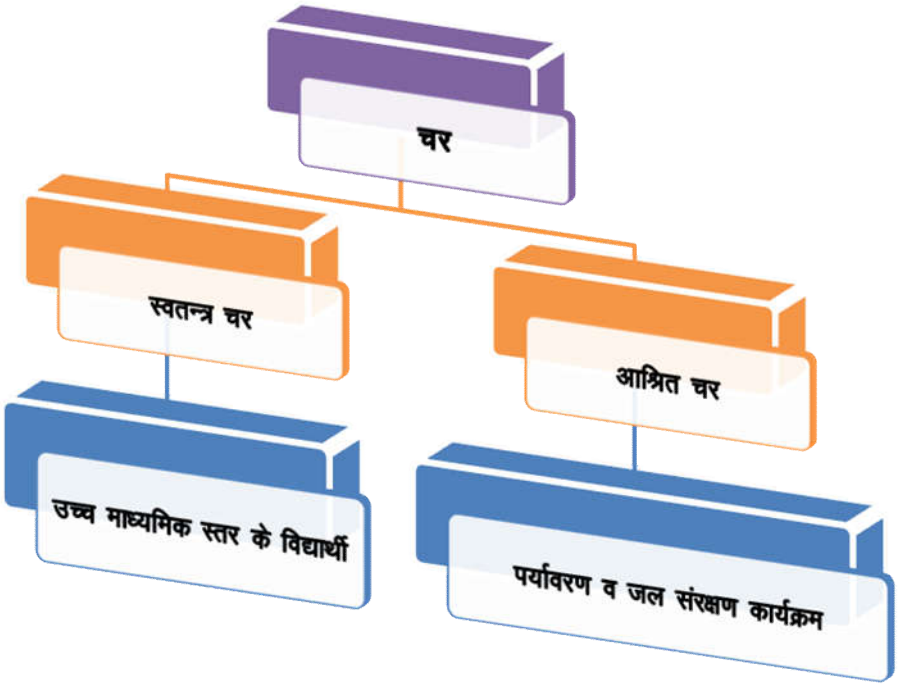

प्रदत्तों के स्त्रोत –

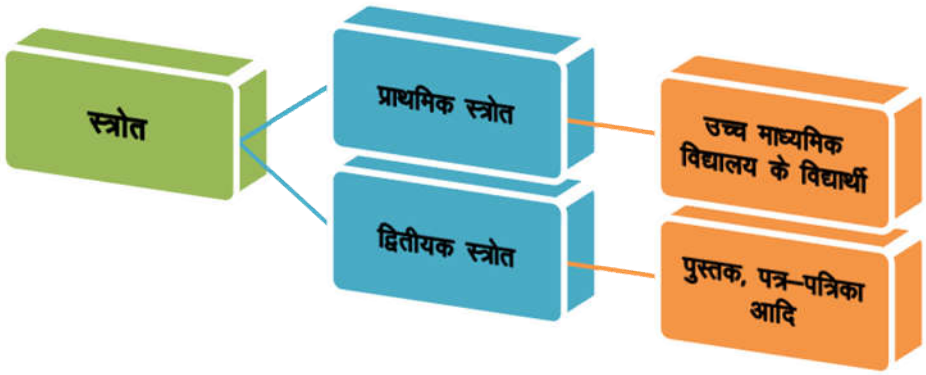

प्रदत्तों की प्रकृति –

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक तथा गुणात्मक है।

परिसीमा –

क्षेत्र – प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु जयपुर जिले के राज्य सरकार द्वारा संचालित शहरी तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि के 4 विद्यालयों का ही चयन किया गया है।

स्तर – प्रस्तुत अध्ययन में केवल उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को ही लिया गया है जो कक्षा 11वीं और 12वीं में अध्ययनरत है।

लिंग – यह अध्ययन छात्र तथा छात्राओं दोनों पर किया गया है।

विद्यार्थी – प्रस्तुत शोध केवल 120 विद्यार्थियों पर किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

न्यादर्श –

शोध के लिए जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 व 12 के 120 विद्यार्थियों को लिया गया।

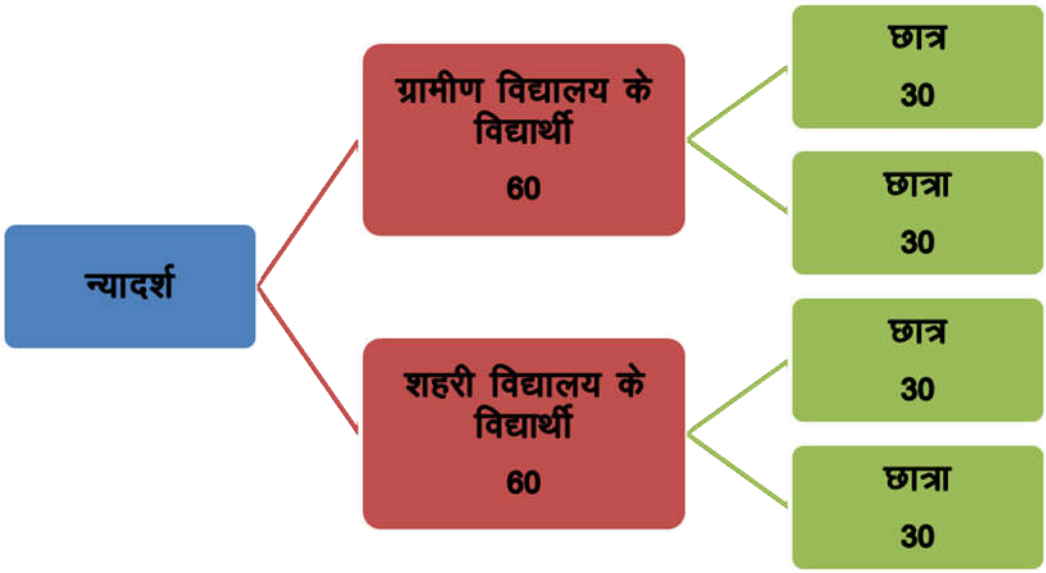

अध्ययन के उपकरण –

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी –

(प) मध्यमान

(पप) प्रमाणिक विचलन :

(पपप) टी–परीक्षण

शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष –

परीक्षणों से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकी विधि से प्रयोग करके शोध से सम्बन्धित निष्कर्षों को प्राप्त किया जाता है।

- **परिकल्पना प्रथम– उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता पायी जाती है।** तालिका में प्रदर्शित परिणामों के आधार पर हम कह सकते है कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता पायी जाती है, अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। संभवतः इसका कारण दोनों समूहों की पर्यावरण तथा जल संरक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता रही होगी।
- **परिकल्पना द्वितीय– उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों के मध्य पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।** तालिका में प्रदर्शित परिणामों के आधार पर हम कह सकते है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों के मध्य पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका कारण ग्रामीण व शहरी परिवेश के छात्रों की पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों में संलग्नता रहा होगा।
- **परिकल्पना तृतीय– उच्च माध्यमिक स्तर की ग्रामीण व शहरी छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।** तालिका में उल्लेखित परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर की ग्रामीण व शहरी छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। संभवतः इसका कारण विद्यालयों में आयोजित होने वाले पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों में छात्राओं की भागीदारी रही होगी।
- **परिकल्पना चतुर्थ– उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।** तालिका में उल्लेखित परिणामों के आधार पर कहा जा

सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। संभवतः इसका कारण पर्यावरण व जल संरक्षण कार्यक्रमों में छात्र–छात्राओं का समन्वित प्रयास रहा होगा।

- **परिकल्पना पंचम– उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र तथा ग्रामीण छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।** तालिका में प्रदर्शित परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र तथा ग्रामीण छात्राओं के मध्य पर्यावरण एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। संभवतः इसका कारण उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों में आयोजित होने वाले पर्यावरणीय कार्यक्रमों में छात्र–छात्राओं का समन्वित सहयोग रहा होगा।

शैक्षिक निहितार्थ :–

(1) शिक्षकों के लिए सुझाव :–

1. शिक्षकों को पर्यावरण विषय पर छात्रों को समय–समय पर नवीन जानकारियों से अवगत करना चाहिए। विद्यार्थियों को पर्यावरण के महत्व के बारे में बताकर उसे जागरूक करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. शिक्षकों द्वारा रेलियॉ, नुक्कड़– नाटक सभा तथा वृक्षारोपण कार्यक्रमों का आयोजन करके पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता से विद्यार्थियों को अवगत कराते रहना चाहिए।
3. राज्य स्तर पर भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने वाले कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को अपने स्तर पर भी कार्यक्रम चलाकर आम जन को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक करना चाहिए।

(2) सरकार के लिए सुझाव :–

1. सरकार को भी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रिंट मीडिया तथा इलैक्ट्रानिक मीडिया का प्रयोग करना चाहिए।
2. पर्यावरण शिक्षा को उच्च माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। तथा स्नातक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा में डिप्लोमा आदि कोर्सो की भी व्यवस्था करनी चाहिए।
3. सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु विद्यालयों में समय–समय पर पौधों का निःशुल्क वितरण करवाना चाहिए जिन्हें विद्यार्थियों द्वारा जगह–जगह रोपण करवाया जाना चाहिए।
4. पर्यावरण शिक्षा के लिए अलग विभाग बनाकर प्रशिक्षित एवं विद्वान कर्मचारियों एवं अधिकारियों की नियुक्ति करनी चाहिए।
5. पर्यावरण के क्षेत्र में नवीन शोधकार्यों को प्रोत्साहन देकर उनके आधार पर भी पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण के कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए।

(3) समाज के लिए सुझाव :–

1. समाज को पुराने रूढ़िवादी विचारों का त्याग करके सत्य को खोजने की भावाना का विकास करना चाहिए।
2. लोगो के स्वयं में निरन्तरता की भावना का विकास करना चाहिए।
3. पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता के क्षेत्र में कार्यकर रहे स्वयंसेवी संगठनों को भी वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए।
4. शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी पर्यावरण शिक्षा विषय अनिवार्य रूप से पढाया जाना चाहिए ताकि भावी शिक्षकों को भी पहले इसके लिए तैयार करना चाहिए।
5. मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में रूचि पैदा करते हुए उनको पर्यावरण के प्रति जागरूक करना चाहिए।

(4) भावी शोध हेतु सुझाव :–

विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास होते हुए वे पर्यावरण के प्रति कितना जागरूक है इसके विषय में जानने के लिए व्यापक अध्ययन की भी आवश्यकता है। इस लघु शोध द्वारा ही इस समस्या को पूर्णरूपेण

हल नहीं किया जा सकता है। इस क्षेत्र के साथ साथ अन्य क्षेत्रों में भी पर्यावरण जागरूकता पर शोधकार्य किये जाने चाहिए इनमें से प्रमुख क्षेत्र निम्न प्रकार है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न शहरों के मध्य किया जा सकता हैं।
2. प्रस्तुत अध्ययन को शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता हैं।
3. प्रस्तुत अध्ययन को अध्यापक तथा अभिभावकों को लेकर भी किया जा सकता हैं।
4. प्रस्तुत अध्ययन को समाज के विभिन्न वर्ग, जाति तथा समूदाय को लेकर भी किया जा सकता हैं।
5. प्रस्तुत अध्ययन को हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के एवं सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता हैं।
6. प्रस्तुत अध्ययन अधिस्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता हैं।